4 इमाइल दुर्खीम : सामाजिक तथ्य एवं सामाजिक एकता
[EMILE DURKHEIM : SOCIAL FACT AND SOCIAL SOLIDARITY]

फ्रांस के सामाजिक विचारकों में आगस्त कॉम्ट के बाद इमाइल दुर्खीम[1] को ही सबसे महत्वपूर्ण समाजशास्त्री माना जाता है। कॉम्ट ने अपने विभिन्न विचारों के द्वारा एक विज्ञान के रूप में जिस समाजशास्त्र की कल्पना की थी, दुर्खीम ने उसे व्यवस्थित रूप देने तथा समाजशास्त्र की विषय-वस्तु का निर्धारण करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह सच है कि कॉम्ट को 'समाजशास्त्र का जनक' माना जाता है लेकिन अपने जीवन काल में कॉम्ट को बौद्धिक और शैक्षणिक धरातल पर कोई विशेष मान्यता प्राप्त नहीं हो सकी। इसके विपरीत, दुर्खीम वह पहले विचारक थे जिन्होंने अपनी बौद्धिक प्रतिभा के साथ ही शैक्षणिक स्तर पर भी विशेष सम्मान पाने में सफलता प्राप्त की। उन्हें फ्रांस में समाजशास्त्र का प्रथम प्रोफेसर बनने का गौरव प्राप्त हुआ। इसी कारण दुर्खीम को फ्रांस का पहला 'शैक्षणिक समाजशास्त्री' (academic sociologist) भी कहा जाता है। यह सच है कि दुर्खीम से पहले कॉम्ट तथा स्पेन्सर ने समाजशास्त्र को एक स्वतन्त्र विज्ञान के रूप में स्थापित करने के भरसक प्रयत्न किये थे लेकिन दुर्खीम वह पहले विद्वान थे जिन्होंने समाजशास्त्र को एक वैध रूप देने तथा विभिन्न सामाजिक विज्ञानों के बीच इसे एक स्वतन्त्र विज्ञान के रूप में मान्यता दिलवाने में सफलता प्राप्त की।

दुर्खीम का दृढ़ विश्वास था कि समाजशास्त्र को एक विज्ञान तभी बनाया जा सकता है जब इसके अध्ययन में उन्हीं पद्धतियों को अपनाया जाये जिनका उपयोग भौतिक विज्ञानों के अध्ययन में किया जाता है। इस अर्थ में दुर्खीम भी कॉम्ट के समान एक प्रत्यक्षवादी थे। उन्होंने भौतिक विज्ञानों की तरह समाजशास्त्रीय अध्ययनों के लिए भी अवलोकन, वर्गीकरण, प्रयोग एवं तुलना पर विशेष बल दिया। समाजशास्त्र की विषय-वस्तु को स्पष्ट करते हुए उन्होंने लिखा कि समाजशास्त्र वह विज्ञान है जिसमें सामाजिक तथ्यों (social facts) का अध्ययन किया जाता है। **दुर्खीम** के अनुसार, "सामाजिक तथ्यों का सम्बन्ध कार्य करने, विचार करने तथा अनुभव करने के उन सभी तरीकों से है जो व्यक्तिगत चेतना के बाहर स्थित होते हैं तथा जिनमें दबाव की इतनी शक्ति होती है कि वे व्यक्तियों के आचरणों को नियन्त्रित करते रहते हैं।" दुर्खीम ने सबसे पहले यह अनुभव किया कि 'सामाजिक' शब्द एक ऐसा विशेषण है जिसका उपयोग किसी भी घटना या किसी भी सन्दर्भ में कर लिया जाता है। इस भ्रम का निवारण तभी किया जा सकता है जब 'सामाजिक' शब्द की विवेचना समाजशास्त्र के सन्दर्भ में की जाये। उनके अनुसार कोई भी वह घटना या मानसिक क्रिया जो समाज में घटित होती है, उसे 'सामाजिक' नहीं कहा जा सकता। फ्रांसीसी परम्परा के सन्दर्भ में दुर्खीम ने स्पष्ट किया कि 'सामाजिक' शब्द का प्रयोग दो अर्थों में ही किया जा सकता है—पहला अर्थ यह है कि 'सामाजिक' शब्द का अभिप्राय किसी सांस्कृतिक दशा से होता है, मानसिक दशा से नहीं। उदाहरण के लिए, मनुष्य के जो व्यवहार जन्मजात या वंशानुगत होते हैं, वे मानसिक व्यवहार हैं, अतः उन्हें सामाजिक व्यवहार नहीं कहा जा सकता। दूसरी ओर, जिन व्यवहारों का सम्बन्ध सांस्कृतिक सीख, जैसे—धर्म, भाषा या नैतिक नियमों आदि से होता है, वे सांस्कृतिक व्यवहार हैं। इस कारण इन्हें 'सामाजिक व्यवहार' कहा जायेगा। 'सामाजिक' शब्द का दूसरा अर्थ सामूहिक जीवन से है, वैयक्तिक जीवन से नहीं। इसका तात्पर्य है कि केवल उन्हीं घटनाओं को सामाजिक घटनाएँ कहा जा सकता है जिनकी प्रकृति सामूहिक होती है। अपने इसी तर्क के आधार पर दुर्खीम ने बताया कि जीवशास्त्र अथवा मनोविज्ञान में जिन तथ्यों का

1 फ्रेंच भाषा में Durkheim का उच्चारण 'दरखाइम' है लेकिन सामान्य प्रचलन के अनुसार पुस्तक में हम 'दुर्खीम शब्द का ही प्रयोग कर रहे हैं।

Scanned with CamScanner

अध्ययन किया जाता है, वे वैयक्तिक जीवन से सम्बन्धित होने के कारण समाजशास्त्र की विषय-वस्तु से भिन्न हैं।

समाजशास्त्र को एक पृथक् सामाजिक विज्ञान के रूप में स्थापित करने के लिए दुर्खीम ने जो योगदान किया, उससे स्पष्ट होता है कि उनमें एक विलक्षण तर्क-शक्ति थी। दुर्खीम के जीवन, कृतियों तथा समाजशास्त्र के लिए उनके योगदान को समझने से पहले यह ध्यान रखना आवश्यक है कि प्रत्येक विचारक के चिन्तन पर अपने समय की सामाजिक एवं राजनीतिक दशाओं का प्रभाव अवश्य पड़ता है। **दुर्खीम के समय में फ्रांस का सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक वातावरण** परिवर्तन के दौर से गुजर रहा था। उस समय एक ओर औद्योगिक विकास तथा वैज्ञानिक आविष्कारों के कारण पुरानी मान्यताएँ कमजोर पड़ती जा रही थीं तो दूसरी ओर, समाज का एक बड़ा वर्ग परम्परागत धार्मिक विश्वासों तथा कल्पना पर आधारित साहित्य को ही विद्वत्ता का वास्तविक आधार मानने के पक्ष में था। इन दशाओं के बीच दुर्खीम ने यह स्पष्ट किया कि नैतिकता से हटकर धर्म का कोई अस्तित्व नहीं हो सकता। नैतिकता सामूहिक जीवन की एक आधारभूत विशेषता है तथा इसका सम्बन्ध समाज की तत्कालीन दशाओं से सामंजस्य स्थापित करके मानव व्यवहारों को नियन्त्रित करना है। इस दृष्टिकोण से नैतिकता भी एक सामाजिक तथ्य है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि समाजशास्त्र को एक नये विज्ञान के रूप में प्रतिष्ठित करके ही एक व्यावहारिक नैतिकता को विकसित किया जा सकता है। सामाजिक एकता, धर्म, आत्महत्या तथा सामूहिक चेतना जैसे विषयों पर दुर्खीम के विचारों से यह स्पष्ट हो जाता है कि सामाजिक घटनाओं के अध्ययन के लिए वह अवलोकन, वर्गीकरण तथा तुलना को ही वैज्ञानिक पद्धति का आधार मानते हुए इसी के द्वारा सामाजिक घटनाओं के अध्ययन के पक्ष में थे।

दुर्खीम का जीवन-परिचय एवं कृतियाँ
(LIFE SKETCH AND WORKS OF DURKHEIM)

इमाइल दुर्खीम का जन्म 15 अप्रैल, सन् 1858 में पूर्वी फ्रांस के लॉरेन (Lorraine) प्रान्त में स्थित एपिनाल (Epinal) नामक नगर में एक यहूदी परिवार में हुआ था। फ्रांस के इतिहास में लॉरेन का महत्वपूर्ण स्थान रहा है क्योंकि इस क्षेत्र के यहूदियों ने फ्रांस के सांस्कृतिक तथा राजनीतिक जीवन में सदैव रचनात्मक भूमिका निभाई। फ्रांस का एक अल्पसंख्यक समुदाय होने के बाद भी यहूदी वर्ग धार्मिक और राष्ट्रवादी विचारों से युक्त रहा। यह सच है कि फ्रांस के कुछ भागों में यहूदियों के साथ काफी भेदभाव किया जाता था लेकिन लॉरेन प्रान्त में यहूदियों के साथ ईसाइयों का व्यवहार बहुत उदारता और सहयोग का था। दुर्खीम की पारिवारिक परम्परा में यहूदी दर्शन (Rabbi tradition) की प्रधानता थी, इसलिए अपने आरम्भिक जीवन में दुर्खीम ने भी यहूदी धर्म की परम्परा का पालन करना आरम्भ कर दिया। उन्होंने एक ओर हिब्रू भाषा के माध्यम से यहूदी दर्शन को समझा तो दूसरी ओर, कैथॉलिक धर्म को मानने वाली अपनी एक शिक्षिका के प्रभाव से ईसाई धर्म की शिक्षाओं को भी समझना आरम्भ कर दिया। इसके बाद भी दुर्खीम ने जल्दी ही अपने आपको विभिन्न धार्मिक विश्वासों से अलग करके एक अज्ञेयवादी (agnostic) के रूप में धर्म को एक सामाजिक तथ्य के रूप में देखना आरम्भ कर दिया।

दुर्खीम की प्रारम्भिक शिक्षा एपिनाल के एक स्थानीय कॉलेज में हुई। प्रारम्भ से ही वह एक प्रतिभाशाली और परिश्रमी विद्यार्थी रहे तथा समय-समय पर उन्हें बहुत-से पुरस्कार प्राप्त होते रहे। अपने आरम्भिक जीवन से ही दुर्खीम की इच्छा एक सफल प्राध्यापक बनने की थी। अतः एपिनाल के कॉलेज से स्नातक की उपाधि पाने के बाद दुर्खीम ने पेरिस की विश्व-प्रसिद्ध शिक्षण संस्था **इकोल अकादमी** (Ecole Normale) में प्रवेश पाने का प्रयत्न करना आरम्भ कर दिया। उन दिनों इकोल अकादमी से डिग्री लेकर निकलने वाले छात्रों को ही फ्रांस के विश्वविद्यालयों तथा दूसरे उच्च पदों पर नियुक्ति के लिए सबसे अधिक उपयुक्त समझा जाता था। इस संस्था में प्रवेश पाना सरल नहीं था। स्वयं दुर्खीम भी प्रवेश-परीक्षा में दो बार असफल रहने के बाद अन्ततः सन् 1879 में इकोल अकादमी में प्रवेश पा सके। इकोल अकादमी में ही दुर्खीम का सम्पर्क उन अनेक प्रतिभावान छात्रों से हुआ जिन्होंने आगे चलकर फ्रांस के बौद्धिक जीवन में अपना विशेष योगदान किया। फ्रांस के महान दार्शनिक हेनरी बर्गसन (Henri Bergson) तथा समाजवादी नेता जीन जॉरस (Jean Jaures) उनसे एक वर्ष आगे थे, जबकि ब्लोन्देल (Blondel) जैसे प्रख्यात दार्शनिक ने दुर्खीम से दो वर्ष बाद प्रवेश लिया था। इसके अतिरिक्त, मनोवैज्ञानिक पीयर जेनेट

Scanned with CamScanner

(Pierre Janet) तथा दार्शनिक गोबलोट (Goblot) उनके सहपाठी थे। लेवी ब्रूल तथा एस्पिनॉस (Espinas) जैसे होनहार समाजशास्त्री भी दुर्खीम के सहपाठी थे।

यद्यपि किसी भी युवा व्यक्ति के जीवन में इकोल अकादमी में प्रवेश पाना एक उपलब्धि माना जाता था लेकिन दुर्खीम इस अकादमी की कार्य-पद्धति से अधिक सन्तुष्ट नहीं थे। उनकी आरम्भ से ही नैतिक सिद्धान्तों तथा वैज्ञानिक विकास की नयी उपलब्धियों में रुचि थी। इसके विपरीत, अकादमी में फ्रेंच, लैटिन और ग्रीक दर्शन तथा साहित्य के अध्ययन पर जोर दिया जाता था। सम्भवत: यही कारण था कि दुर्खीम इस अकादमी में अपने सहपाठियों के बीच कुछ अलग-थलग पड़ गये। उन्होंने सन् 1882 में जब स्नातक की उपाधि प्राप्त की, तब शिक्षकों द्वारा भी उन्हें उत्तीर्ण विद्यार्थियों में बहुत निम्न स्थान दिया गया। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि इकोल अकादमी में अपने तीन वर्ष के अध्ययनकाल में दुर्खीम अपने शिक्षकों और सहपाठियों से पूरी तरह अप्रभावित रहे हों। जिन शिक्षकों से दुर्खीम अधिक प्रभावित हुए, उनमें से एक प्रत्यक्षवादी इतिहासकार एफ. डी. कुलान्गेस (F. D. Coulanges) तथा दूसरे इमाइल बुत्रोक्स (Emile Boutroux) जैसे महान दार्शनिक थे। प्रोफेसर कुलान्गेस ने सन् 1880 में अकादमी का निदेशक बनने पर वहाँ के पाठ्यक्रम में अनेक ऐसे परिवर्तन किये थे जो दुर्खीम की रुचि और प्रतिभा के अनुकूल थे। प्रोफेसर कुलान्गेस से ही दुर्खीम ने ऐतिहासिक शोध की आलोचनात्मक पद्धति को सीखा। बाद में दुर्खीम ने लैटिन भाषा में मॉण्टेस्क्यू (Montesquieu) पर जब अपना शोध प्रबन्ध लिखा तो उसे उन्होंने प्रोफेसर कुलान्गेस को ही आदर के रूप में समर्पित किया। अकादमी में अपने अध्ययन के दौरान दुर्खीम ने विभिन्न विषयों पर जो लेख लिखे, उनसे प्रभावित होकर प्रोफेसर इमाइल बुत्रोक्स ने उन्हें अपने निर्देशन में पी-एच. डी. की उपाधि के लिए थीसिस लिखने को आमन्त्रित किया। प्रोफेसर बुत्रोक्स समग्र की इकाइयों का पृथक् अध्ययन करने (Atomism) के विरोधी थे। उनका तर्क था कि कोई भी अध्ययन किसी तथ्य की समग्रता के आधार पर ही किया जा सकता है क्योंकि विभिन्न इकाइयों की अन्त:क्रिया और सम्मिलन से एक नयी वस्तु के रूप में समग्र का निर्माण होता है। बुत्रोक्स के अनुसार समाज स्वयं में एक वास्तविक सत्ता है जिसकी व्याख्या मनोवैज्ञानिक या जैविकीय तथ्यों के आधार पर नहीं की जा सकती। दुर्खीम पर प्रोफेसर बुत्रोक्स के इन विचारों का बहुत प्रभाव पड़ा। इसी के फलस्वरूप दुर्खीम ने सामाजिक तथ्य (social fact) तथा सामाजिक यथार्थवाद (social realism) जैसे सिद्धान्तों की रूपरेखा बनाना आरम्भ कर दिया। बाद में जब उन्होंने सन् 1893 में डॉक्टरेट की उपाधि के लिए लिखे गये शोध प्रबन्ध *'The Division of Labour in Society'* को प्रकाशित करवाया, तब इसे उन्होंने प्रोफेसर बुत्रोक्स को ही श्रद्धा के रूप में समर्पित किया। निश्चित रूप से यह दुर्खीम के जीवन पर इकोल अकादमी का प्रभाव था।

वास्तविकता यह है कि स्नातक की उपाधि प्राप्त करने के समय से ही दुर्खीम अपने आपको किसी ऐसे विषय के अध्ययन में लगाना चाहते थे जिसके द्वारा वह कुछ प्रमुख नैतिक प्रश्नों का उत्तर ढूँढ़ सकें तथा जो विषय उनके समकालीन समाज की समस्याओं का समाधान करने में उनका व्यावहारिक निर्देशन कर सकें। उनका विश्वास था कि केवल एक ठोस वैज्ञानिक प्रशिक्षण के द्वारा ही यह सब कर पाना सम्भव है। इसी कारण उन्होंने यह निर्णय किया कि उनका प्रमुख उद्देश्य समाज का वैज्ञानिक अध्ययन करना होगा। दुर्खीम समाजशास्त्रीय आधार पर एक ऐसा वैज्ञानिक अध्ययन करना चाहते थे जिसे समाज के नैतिक विकास का एक साधन बनाया जा सके। उनका यह वह लक्ष्य था जिससे दुर्खीम फिर कभी अलग नहीं हुए। इसके बाद भी उस समय स्कूल अथवा विश्वविद्यालय स्तर पर शिक्षा में समाजशास्त्र जैसे किसी विषय को मान्यता प्राप्त नहीं थी। फलस्वरूप सन् 1882 से 1887 के बीच दुर्खीम ने पेरिस के समीपवर्ती अनेक स्कूलों में दर्शनशास्त्र के शिक्षक के रूप में कार्य किया। इसी बीच वह एक वर्ष का अवकाश लेकर अपने आगामी अध्ययन के लिए पेरिस और जर्मनी में भी रहे। जर्मनी में उन्होंने दर्शनशास्त्र के अतिरिक्त दूसरे सामाजिक विज्ञानों, जैसे—अर्थशास्त्र, सांस्कृतिक मानवशास्त्र तथा मनोविज्ञान का अध्ययन किया। उनका अधिकांश समय जर्मनी के बर्लिन तथा लेपजिक नगरों में व्यतीत हुआ। लेपजिक में ही वह अपने समय के प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक **विलहेम वुण्ट** (Wilhelm Wundt) के सम्पर्क में आये जिनके प्रभाव से उन्हें शोध कार्य के लिए वैज्ञानिक पद्धति के प्रयोग का प्रशिक्षण मिला। जर्मनी के समाज वैज्ञानिकों से ही उन्हें यह समझने की प्रेरणा मिली कि नैतिकता की सामाजिक जड़ें क्या हैं तथा किस प्रकार नीतिशास्त्र को एक स्वतन्त्र और वैज्ञानिक विषय बनाया जा सकता है। उन्होंने जर्मनी के बौद्धिक जीवन पर अपनी जो रिपोर्ट लिखी, उसके कारण दुर्खीम को 29 वर्ष की अवस्था में ही समाज विज्ञानों तथा सामाजिक दर्शनशास्त्र के क्षेत्र में मान्यता

Scanned with CamScanner

मिलने लगी। जर्मनी के समाजशास्त्रियों जैसे **गुम्प्लोविज** तथा **शैफिल** (Gumplowiez and Schaeffle) की रचनाओं पर दुर्खीम ने जो समालोचनात्मक लेख लिखे, उनसे भी उनकी प्रसिद्धि बढ़ने लगी। इसके फलस्वरूप सन् 1887 में दुर्खीम बोर्डियाक्स विश्वविद्यालय में शिक्षक के रूप में नियुक्त हो गये। बोर्डियाक्स विश्वविद्यालय में दुर्खीम की नियुक्ति दर्शनशास्त्र विभाग में हुई थी लेकिन उच्च शिक्षा के निदेशक की संस्तुति पर उनके लिए इसी विभाग में समाज विज्ञान का पाठ्यक्रम भी आरम्भ कर दिया गया। यह एक आश्चर्यजनक घटना थी क्योंकि लगभग 10 वर्ष पहले इसी विश्वविद्यालय में दुर्खीम के समकालीन समाजशास्त्री एल्फ्रेड एस्पिनाज (Alfred Espinas) के शोध प्रबन्ध पर इसलिए आपत्ति की गयी थी कि उन्होंने इसकी भूमिका में से आगस्त कॉम्ट के नाम को निकालना स्वीकार नहीं किया था।

बोर्डियाक्स विश्वविद्यालय में अध्यापन के दौरान ही दुर्खीम का **लूसी ड्रेफू** (Louise Dreyfus) से विवाह हुआ। पुत्री मेरी तथा पुत्र आन्द्रे उनकी दो सन्तानें थीं। दुर्खीम के पारिवारिक जीवन के बारे में बहुत कम जानकारी मिलती है, यद्यपि यह अवश्य ज्ञात है कि दुर्खीम की पत्नी ने यहूदी परिवार की परम्परा का निर्वाह करते हुए अपना सम्पूर्ण समय परिवार को व्यवस्थित करने तथा दुर्खीम के विभिन्न कार्यों में उनकी सहायता करने में व्यतीत किया। बोर्डियाक्स विश्वविद्यालय में दुर्खीम का समय गहन चिन्तन और रचनात्मक लेखन का काल था। यहाँ उन्होंने टॉनीज तथा अनेक दूसरे विद्वानों के लेखों की समालोचना की तथा अपने अनेक व्याख्यानों को लेखों के रूप में प्रकाशित करवाया। सन् 1893 में उन्होंने फ्रेंच भाषा में अपनी पी-एच. डी. की थीसिस *'The Division of Labour in Society'* (समाज में श्रम-विभाजन) तथा लैटिन भाषा में मॉण्टेस्क्यू पर शोध प्रबन्ध प्रकाशित करवाया। इसके दो वर्ष बाद ही उनकी पुस्तक *'The Rules of Sociological Method'* (समाजशास्त्रीय पद्धति के नियम) प्रकाशित हुई जिसने समाजशास्त्रीय अध्ययन के लिए एक नयी दिशा दी। दो वर्ष बाद ही सन् 1897 में उनकी पुस्तक *'The Suicide'* (आत्महत्या) का प्रकाशन हुआ। इन तीन प्रमुख पुस्तकों से फ्रांस के बौद्धिक जगत में दुर्खीम को एक प्रतिभाशाली विद्वान के रूप में देखा जाने लगा। फ्रांस में जब समाजशास्त्र के प्रति विद्वानों की रुचि बढ़ने लगी तो इसका और अधिक विकास करने के लिए दुर्खीम ने सन् 1898 से *'L Annee Sociologique'* नामक समाजशास्त्रीय पत्रिका का सम्पादन करना आरम्भ कर दिया। यह एक उच्च कोटि की समाजशास्त्रीय पत्रिका थी जिसके माध्यम से समाजशास्त्र में रुचि रखने वाले युवा विद्वानों को अपने विचार स्पष्ट करने का अवसर मिल गया। साथ ही इस पत्रिका में प्रकाशित विचारों से एक नये समाजशास्त्रीय सम्प्रदाय का विकास हुआ जिसे 'दुर्खीम सम्प्रदाय' के नाम से जाना जाता है।

बोर्डियाक्स विश्वविद्यालय में 9 वर्ष तक दर्शन विभाग से सम्बद्ध रहने के बाद सन् 1896 में दुर्खीम को समाज विज्ञान का प्रोफेसर बना दिया गया। इस पद पर वह वहाँ 6 वर्ष तक कार्य करते रहे। इस समय तक दुर्खीम की गणना फ्रांस के प्रमुख विद्वान तथा शिक्षाशास्त्री के रूप में की जाने लगी। फलस्वरूप सन् 1902 में उन्हें पेरिस विश्वविद्यालय में शिक्षाशास्त्र के प्रोफेसर के पद के लिए आमन्त्रित किया गया। समाजशास्त्र की ओर दुर्खीम की बढ़ती हुई रुचि तथा उनकी उपलब्धियों को देखते हुए सन् 1913 में दुर्खीम द्वारा संचालित विभाग का नाम बदलकर **'शिक्षाशास्त्र एवं समाजशास्त्र विभाग'** कर दिया गया। इस प्रकार सन् 1838 में कॉम्ट ने फ्रांस में 'समाजशास्त्र' के नाम से जिस नये विज्ञान की कल्पना की थी, सन् 1913 में दुर्खीम ने फ्रांस में समाजशास्त्र का पहला प्रोफेसर बनकर उसे एक मान्यता-प्राप्त विषय का रूप देना आरम्भ कर दिया।

पेरिस में रहते हुए भी दुर्खीम ने अपनी पत्रिका *'L' Annee Sociologique'* का सम्पादन जारी रखा। इसमें उन्होंने नीतिशास्त्र, शिक्षाशास्त्र, धर्म, राजनीतिक दर्शन तथा सेण्ट साइमन और कॉम्ट के विचारों से सम्बन्धित विभिन्न पक्षों का विद्वत्तापूर्ण विश्लेषण प्रस्तुत किया। इस समय राबर्ट्सन, स्मिथ तथा मानवशास्त्र के ब्रिटिश सम्प्रदाय से प्रभावित होकर दुर्खीम की रुचि धार्मिक तथ्यों के अध्ययन में बढ़ने लगी थी। फलस्वरूप उन्होंने पहले जनजातीय धर्म पर अनेक लेख लिखे तथा बाद में इन्हीं लेखों पर आधारित उनकी अन्तिम महत्वपूर्ण पुस्तक सन् 1912 में *'The Elementary Forms of Religious Life'* (धार्मिक जीवन के प्रारम्भिक स्वरूप) नाम से प्रकाशित हुई। दुर्खीम केवल एक महान विचारक ही नहीं थे बल्कि वह एक गम्भीर और सफल शिक्षक भी थे। कठिन-से-कठिन विषयों को भी सरल, तार्किक और आकर्षक ढंग से स्पष्ट करने की उनमें अपूर्व क्षमता थी। विभिन्न विषयों पर उनका भाषण बहुत प्रभावपूर्ण था। दुर्खीम के बारे

Scanned with CamScanner